

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ बुक्स.

—: इस्त अथ संग्रह :—

ग्रंथ नमांक।

ग्रंथ नामिक।

(१९०५) (१९०५)

चीलावणी।

विषय मराठी काव्य।

"Joint Publication of  
Rajendra de Samodhan Mandal, Dhole and the Yashintrao Chavhan Press,  
"Joint Publication Number 1,"

"Joint Publication Number 1,"

रु 900

म न

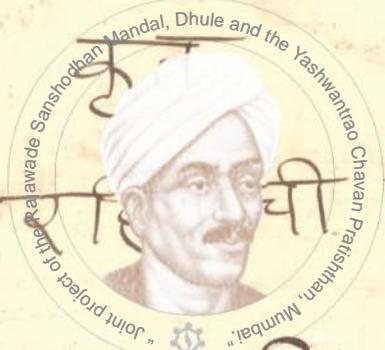
राहीर सयाजी बाण

५६१८६८

कोड

विराट की लावणी

मराठी



॥ च्यालुमसि पावसाका कमिं जा ॥ आत्माद  
 ॥ सरा ॥ पति जातो विदेशा मे दुर्बिधा  
 ॥ णकरोनि ॥ ठिक लावा निगमन के  
 ॥ लसाया सि ॥ इउर सपकः नमि  
 ॥ जेन पति कारण ॥ युज बो लुतया  
 ॥ सि ॥ कामिणा बो उहा सत्तराजा  
 ॥ होमातुरा ॥ वे गियो बंगाना सि अ  
 ॥ बेक्काबाक्का आति सुंदरि ॥ चित ब  
 ॥ हुकरि ॥ ३३ कातिक मास हा किल  
 ॥ चोमा हाषुप्याचा ॥ लोक जाति ना  
 ॥ भवया तुकसि दंदाव न ऐडोन्क  
 ॥ आपराण विश्वलेन जे इतो पा  
 ॥ दिल्ली लाला  
 ॥ पति  
 ॥ लापति गेला हो ॥ पति वि  
 ॥ णकरोना ॥ घरो घरि आनंद करि  
 ॥ तिचं पात्रो छी चासण पति विण  
 ॥ कायकरण ॥ विशा समान गोउन  
 ॥ बाटे सर्वथा ॥ पति जे हो देखन  
 ॥ सालणि आहो नये निले हा  
 ॥ उक्कास मोटा ॥ ३५ पोत्रो मास आ  
 ॥ ऊ साजणि नये आसोणि काये  
 ॥ करु जातां ॥ तिळसंकाती चासण  
 ॥ करिति ॥ मजबाटे सि चिता ॥  
 ॥ घरो घरि वाण सुगउचिहाळा  
 ॥ कुंकाचिगोडन बाटे सर्वधा ॥ पति



The Rajawade Sanskriti Bodhan Mandal, Dhule and the  
 Om Project, Om Mantra Chakra, Munshi P. D. Publications, Mumbai

॥जे हादेर बन साजणी॥ याव लो  
॥ कुनितेण उत्कस मोटा॥ ४॥  
॥ माघ मास अलग हो साजणी॥  
॥ कर कायवो हिबाक्का जाता मा  
॥ रि आंबे जाबु क्लिपान सउति  
॥ वारि उनति॥ रुतं काळ चमा  
॥ रिगदि पका विण डे सिमंदर उं  
॥ न्यधाव लगा॥ तेसी सुर खांतरि  
॥ मेधा विण मेदी नीपि के नाभा  
॥ सुर नाना॥ तेसी पति विण का  
॥ मीणी॥ अफाल छुण मास हाव  
॥ संत॥ रव व व व सत जे नु लो क



॥ मज का ही सास ना पहुँ  
॥ गुप्त पुस्पा चिह्नो जटा की ठी॥  
॥ मज नीद्रा ता गे ना पति माझा  
॥ गाविजा सत्ता सिण हारता॥ का  
॥ ये करु मिजातां॥ ७॥ वेजारव  
॥ मास सण हो तिथि कोण बो॥  
॥ आठी आरवि तिज सये॥ पित्र  
॥ चिसामु ग्रिकरण वीट पठु  
॥ पति चि॥ च्यातक पहुँची ठचि  
॥ द्रमा॥ तेसी उपमा मज लग  
॥ डी चिता निर्देव जे सिहो मा  
॥ सोकी॥ जाति तछ महिला ते  
॥ सिज्जा ठीठो परि॥ ८॥ जे छमा

॥ ससयेउनाकातपतिज्वला ॥  
 ॥ कायेकरुधननिका ॥ सितक  
 ॥ चंदनचर्चित्रा गतोहीसासि  
 ॥ भा ॥ तापसुवाचिकला ॥ लीरि  
 ॥ तपत्रमज्जधातीता सिणहार  
 ॥ ताकधीदेखनउछाँ ॥ इ ॥ आ  
 ॥ ज्ञाठमासज्ञालापावसाक्षा ॥  
 ॥ मैद्यवरज्ञोत्ता कायेकरुमिद  
 ॥ वा ॥ गंगपुरभान्नाहोटतिनदा  
 ॥ भरति ॥ कीतिकरुमिधावा ॥  
 ॥ दानामासंस्नाडेसोजणि पति  
 ॥ अगानि आमणिनयेचिगं



॥ दानिहुदुधध्रत  
 ॥ आणिराकरा पुजाहोकरा  
 ॥ वलपत्रिवाहाति पतिमा  
 ॥ आगाविवोआसहो पुजा  
 ॥ करितांपुष्येसाचेसंगति  
 ॥ १११ ॥ मादपदमासपोच्छया  
 ॥ चासणबेलाचा ॥ हारिरव  
 ॥ मासीयमनी ॥ मासीयेजां  
 ॥ गणिकाहुवक्षाबोलेमेजुवा  
 ॥ पतिदरवोलजांगणि मझउ  
 ॥ करिउठलीसुंदरिसेजसा  
 ॥ वरि ॥ धावोनीलागत्तीचे

मिलि १२ पंचम अक्षाह संष्टुप  
॥ बोल का मिण ॥ तुमचे नीछु  
॥ मना ॥ थाके आसाजे मिळाउ  
॥ भारत्य के  
॥ विठि विम  
॥ देवण हरे  
॥ याजि ब्राह्मण ॥ १९३८ नव्वा



Digitized by  
Rajawade Sansodha Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pratishakha, Mumbai



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)